प्र०= महाकवि देव के काव्य की काव्यगत विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

उ०- महाकवि देव का काव्य रीति-काल का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। उनकी रचनाओं में प्रेम व्याप्त है। कवि ने 'प्रेम-चन्द्रिका' में प्रेम का अत्यन्त सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है। देव प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। उनको संसार का अच्छा अनुभव था क्योंकि भ्रमण करना उनकी आदत थी। उनमें उत्तम कवित्व शैली और पर्याप्त मौलिकता के दर्शन होते हैं। उनकी रचना में अनुभव एवं भावुकता पर्याप्त मात्रा में दिखायी देती है।

देव के काव्य में कल्पना का चमत्कार यथेष्ट मात्रा में विद्यमान है। देव की कल्पना में केवल चमत्कारिक विशेषता नहीं है, बल्कि वह अनुभूति के रस से सिंचित होकर सरलता-सम्पन्न भी होती है। रस-सिद्ध कवि देव के काव्य में नव-रसों का सम्यक् परिपाक हुआ है। उनके काव्य में वीर, ~~भयानक~~ भयानक आदि रस शृंगार के सहायक के रूप में वर्णित हुए हैं। देव प्रधानतया शृंगारी कवि हैं। इनके काव्य में परम्परागत नायिका-भेद, नख-शिख वर्णन और विलास वर्णन की प्रधानता है। उनमें मौलिकता और भावुकता प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। शृंगार-वर्णन में शारीरिक-पक्ष और मानसिक-पक्ष दोनों पर कवि की दृष्टि रही है। प्रेम के स्वरूप का वर्णन कवि ने बहुत अच्छा किया है। इस वर्णन में गम्भीरता है जो रीतिकाल के कवियों में कम दिखायी पड़ती है। कवि के 'अष्टयाम' में शृंगारपरक दैनिक क्रिया कलापों का अत्यन्त सूक्ष्म वर्णन मिलता है। देव पवित्र, पुनीत दाम्पत्य प्रेम के समर्थक हैं —

"तब ही लौं शृंगार रसु जब लगि दम्पति प्रेम"

शृंगार वर्णन में संयोग-वियोग दोनों का चित्रण हुआ है। पूर्व-राग, विरह, प्रिय आगमन, प्रिय मिलन - विविध स्थितियों के मनोहारी चित्रण मिलते हैं।

देव का प्रकृति-वर्णन अत्यन्त सुन्दर

और मनोहारी है। प्रकृति का वर्णन उद्दीपन रूप में श्रेष्ठ हुआ है। 'पावस' (वर्षा ऋतु) का सुन्दर वर्णन दर्शनीय है—

सुनि के धुनि चातक मोरन की,
चहुँ ओरनि कोकिल कूकन सों।

'बसन्त' का मनोमुग्धकारी वर्णन करते हुए देव लिखते हैं—

माधुरे झौंरनि, फूलनि, मौंरनि, बौरनि-बौरनि बेलि बयी है।

इनकी वैराग्यपूर्ण रचनाएँ भी प्रभावशाली बन पड़ी हैं। उदाहरणार्थ—

जीवतु तो व्रत-भूख सुखात
समीर महा सुररुख हरे को।
ऐसे असाधु असाधुन की बुधि,
साधन देत सराध मरे को।।

देव रीतिकाल के आचार्य के रूप में भी प्रख्यात हैं। इनमें नवीनता है परन्तु आचार्य का रूप स्पष्ट नहीं होता, क्योंकि काव्यांगों का विवेचन न वैज्ञानिक है और न स्पष्ट। पं० रामचन्द्र शुक्ल जी ने लिखा है कि "ये आचार्य और कवि दोनों रूपों में हमारे सामने आते हैं।" वास्तव में देव रीतिकाल के सबसे अधिक सृजन करने वाले कवि हैं। देव की भाँति भाव-सौष्ठव और सूक्ष्म कल्पना रीतिकाल के बहुत कम कवियों में मिलती है।

देव की भाषा ब्रजभाषा है। उनमें माधुर्य और नाद-सौन्दर्य प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। ध्वनि के द्वारा चित्र खड़ा करने की देव में अद्भुत क्षमता है। यद्यपि देव की भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है तथापि उसमें बुन्देलखण्डी, अवधी और राजस्थानी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। भाषा पर अधिक ध्यान देने से कहीं-कहीं वाक्यों की अस्त-व्यस्तता भी दिखाई देती है जिससे अर्थ समझने में व्याघात होता है। एक ओर उनकी भाषा दोष-बाहुल्य में केशव और भूषण से टक्कर लेती है तो दूसरी ओर गुण-समृद्धि में सूर और मतिराम आदि की भाषा से।

देव ने छन्दों में दोहा, कवित्त और सवैया छन्दों का प्रयोग किया है। इनमें

घनाक्षरी छन्द के प्रति विशेष आसक्ति दिखाई देती है। इनकी शैली में भाषा की अपेक्षा भावों पर विशेष बल दिया गया है। कवित्त छन्द की अपेक्षा देव कवि को सवैया छन्द की रचना में अधिक सफलता प्राप्त हुई है। अन्य कवियों की अपेक्षा इनके सवैये अधिक सरल, सुबोध और प्रभावशाली हैं। उदाहरणार्थ, वियोग वर्णन का निम्न सवैया दर्शनीय है —

प्यारी के प्रान संगेत लिया परदेश पयान की बात चलावै।
देखु होग संगेत छया छलियाँ में छलकर की छवि छावे॥
कोकिल भाति बन बीच बसन्त को मधु संगेत नगीच बनावे।
काम के तीर संगेत समीर शरीर में लागत पीर बढ़ावे॥

देव की कविता में अलंकारों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। कवि ने अलंकारों का प्रयोग नायिका के सौन्दर्य वर्णन के प्रभाव को अधिक स्थायी और तीव्र बनाने के लिए किया है। छेकानुप्रास, यमक जैसे अलंकारों से उन्हें विशेष मोह है। इसके अतिरिक्त उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और सन्देह देव के द्वारा प्रयुक्त प्रमुख अलंकार हैं। निम्न कवित्त में उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकारों की शोभा चित्ताकर्षक है :—

मन - मनभावन को मानो किल-किला शोभा,
सिंधु में थिरकि चाव चरण झख पै झटक परयौ।
नीलाम्बर नील जाल बीच ही उरझि देव,
मुरझि सिवल लट वाल में लिपटि परयौ।

महाकवि देव हिन्दी के श्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। ये रीतिकाल के सबसे अधिक सृजनशील कवि हैं। मिश्रबन्धुओं ने उन्हें सूर और तुलसी के समकक्ष स्थान दिया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रीतिकाल के कवियों में देव का महत्वपूर्ण स्थान है। देव की रचनाएँ इनके प्रेमी व्यक्तित्व को उजागर करती हैं।